होली का आध्यात्मिक रहस्य

● ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

होली का त्योहार हर हिन्दी वर्ष के अन्तिम मास फाल्गुन की पूर्णिमा को मनाया जाता है। वर्ष के अन्तिम दिवस का यह उत्सव सन्देश देता है कि हम वर्ष भर की गलतियों और बुरे विचारों को अग्नि में जला दें ताकि प्रारम्भ होने वाले नए वर्ष में हंसते-गाते पवित्रता का पालन करते चलें।

वर्ष के अन्तिम दिवस में पर्व के रूप में मनाई जाने वाली यह यादगार घटना वास्तव में कल्प के अन्त में घटी एक महाघटना की यादगार मात्र है। वह महाघटना क्या है?

प्रचलित कथा

होली के त्योहार से सम्बन्धित प्रचलित कहानी इस प्रकार है कि एक बार सृष्टि पर हिरण्यकश्यप नाम के राक्षस का राज्य था। वह अपने को ही भगवान मानता था और अपने सिवाय किसी अन्य की पूजा नहीं करने देता था। तपस्या के बल से उसने ऐसा वरदान पाया था कि साधारण रीति से उसे कोई भी नहीं मार सकता था। उसका पुत्र प्रह्लाद ईश्वर प्रेमी था और अपने पिता को भगवान नहीं मानता था। पिता ने उसे तरह-तरह की यातनाएं देकर ईश्वर-प्रेम से विमुख करने की कोशिश की। प्रह्लाद सब सहता गया। अति तो तब हो गई जब प्रह्लाद की बुआ होलिका, जिसे न जलने का वरदान प्राप्त था, प्रह्लाद को गोद में लेकर अग्नि में प्रवेश कर गई। पर होलिका का रक्षा-कवच उड़कर प्रह्लाद पर आ गया और वह जलकर भस्म हो गई। प्रह्लाद बच गया। इसके बाद परमात्मा पिता ने हिरण्यकश्यप को मार डाला। इस प्रकार ईश्वर-विरोधी की भेंट में ईश्वर-प्रेमी के विजय की यादगार रूप में यह पर्व मनाया जाता है।

क्या सुधार का एकमात्र मार्ग हिंसा ही है?

कहानी को पढ़कर कई पहलुओं पर प्रकाश मिलता है। पहला तो यह कि क्या भगवान का अवतरण किसी एक पापी का वध करने के लिए होता है? तब क्या 'अहिंसा परमोधर्म' का सिद्धांत गलत है। यदि जगत का मालिक ही हिंसा में हाथ रंगता है तो अहिंसक सृष्टि की स्थापना कौन करेगा? फिर सृष्टि में भाई-चारा और गाय-शेर इकट्ठे जल कब और कैसे पीयेंगे? क्या किसी के परिवर्तन का एक मात्र रास्ता हत्या ही है? कहते हैं, भारत के संन्यासियों के आश्रमों में शेर भी हिसंक वृत्ति भूलकर शान्त भाव से बैठा करते थे और महात्मा बुद्ध ने एक दुर्दान्त डाकू अंगुलीमाल को एक महान भिक्षु के रूप में परिणीत कर दिया था। तो क्या सर्वशक्तिमान परमात्मा उस एक विपरीत बुद्धि मानव का परिवर्तन नहीं कर सकते थे?

एक विचारधारा का प्रतीक हिरण्यकश्यप

वास्तव में हिरण्यकश्यप एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक विचारधारा का प्रतीक है। आज कई लोग स्वयं को शिवोहम् कहकर अपनी पूजा करवाते हैं। वे भगवान को अपने से भिन्न नहीं मानते। कहाँ आवागमन के बन्धन से सदामुक्त निराकार परमात्मा शिव और कहाँ जन्म-मरण के चक्कर में आने वाले ये शरीरधारी मानव? लोग इसे अद्वैत सिद्धांत कहते हैं परन्तु इसे सही अर्थ में लिया जाए तो सभी ब्रह्म हैं, सभी शिव हैं। तो क्या एक ब्रह्म दूसरे को उपदेश देता है और एक ब्रह्म दूसरे ब्रह्म से अपनी पूजा कराता है! वे नारी को सर्पिणी कह उसका मुख देखना पाप समझते हैं, तो क्या नारी ब्रह्म नहीं है? क्या राम के लिए सीता सर्पिणी थी, क्या नारायण के लिए लक्ष्मी सर्पिणी थी?

परमात्मा पिता ने दी नई विचारधारा

परमात्मा पिता ने वास्तव में उपरोक्त विचारधारा को समाप्त कर 'एक परमात्मा, एक विश्व परिवार' की विचारधारा का सूत्रपात किया। परमात्मा पिता ने बताया कि हम सभी

मानव, मूल स्वरूप में ज्योतिबिन्दु आत्माएँ हैं, एक ही पिता की सन्तान और एक ही घर परमधाम की निवासी हैं। सभी आत्माएँ आपस में भाई-भाई हैं। न कोई छोटा, न बड़ा, न नर, न नारी – ये सब तो शरीर रूपी चोले धारण कर निभाए जाने वाले भिन्न-भिन्न पार्ट हैं। हम सभी का मूल धर्म शान्ति है अत: हिन्दू, मुस्लिम आदि धर्म भी देह के हैं और एक जन्म तक हैं। देह बदलने पर देह का धर्म भी बदल जाता है।

ईश्वरीय स्मृति रूपी चादर

विचारधारा की इस क्रान्ति का प्रतीक है होली का त्योहार। लेख के प्रारंभ में हमने जिस महाघटना का जिक्र किया, वास्तव में परमात्मा का धरती पर अवतरित होना और हिरण्यकश्यप (विकारों का प्रतीक) का नाश कर प्रह्लाद (पवित्रता का प्रतीक) की रक्षा करना ही वह महाघटना है जिसकी याद में यह त्योहार मनाया जाता है। कल्प के अन्तिम युग कलियुग और कलियुग के भी अन्तिम चरण में धर्म की अति ग्लानि हो जाती है और हिरण्यकश्यप जैसे लोगों का ही बहुमत हो जाता है। राज्य-कारोबार भी उनके हाथों में ही आ जाता है। वे लोग परमात्मा से बेमुख होकर उनकी श्रीमत के विपरीत आचरण करते हुए मनमानी करते हैं। परमात्मा के मार्ग पर चलने वालों पर अत्याचार होते हैं, कलंक लगते हैं, उन्हें सहयोग नहीं मिलता है। ये अल्पमत में होते हैं। प्रह्लाद ऐसे ही लोगों का प्रतिनिधित्व करता है। प्रह्लाद का अर्थ है वह पहला व्यक्ति जिसको माध्यम बनाकर परमात्मा पिता सबको आल्हादित करते हैं। इस कर्त्तव्य की पूर्ति के लिए परमात्मा पिता गुप्त रूप में धरती पर अवतरित होते हैं। होलिका रूपी विकारी अग्नि से बचाने के लिए अपने बच्चों को योग अर्थात् ईश्वरीय स्मृति रूपी चादर (कवच) देते हैं। ईश्वरीय याद के बल से विकारों की अग्नि शीतल हो जाती है। ईश्वर से प्रेम करने वालों की जीत हो जाती है और उनसे बेमुख करने वाली भावना का नाश हो जाता है। इसी की याद में पहले दिन होलिका जलाई जाती है और अगले दिन एक-दो से गले मिलकर, एक-दो को रंग लगाकर स्नेह-मिलन किया जाता है।

परमात्मा पिता के संग का रंग ही अविनाशी रंग

इसलिए होली को रंगों का त्योहार कहा जाता है। स्थूल अबीर और गुलाल तो कुछ समय के बाद अपना प्रभाव छोड़ देते हैं और इनके कई हानिकारक प्रभाव भी हैं परन्तु ऐसे रंग कौन-से हैं जो युगों तक भी ना उतरें और जो सदा कल्याणकारी भी हों। स्पष्ट है कि ऐसे रंग तो ज्ञान, गुण और शक्तियों के ही हैं जिनसे आत्मा को रंगा जाता है। ये इतने पक्के रंग हैं जो चोला छूटने पर भी आत्मा से नहीं छूटते। परमात्मा का संग पाकर मानव आत्माएँ उनके गुणों का रंग अपने पर लगाती हैं। उसी के समान डबल अहिंसक, रहमदिल, सुखदाता, प्रेमदाता, शान्तिदाता, ज्ञानदाता, पवित्रता दाता बन जाती हैं। ऐसी आत्माओं के द्वारा नए युग, देवताओं के युग का सूत्रपात होता है जिस युग में सर्वत्र सुख-शान्ति का साम्राज्य होता है। प्रकृति सुखदायी और पशु-प्राणियों में भी आपसी प्रेम-सद्भाव होता है।

बरकुले अर्थात् बुरी वृत्तियाँ

होली के दिन गोबर के बरकुले बनाकर होली जलाते हैं और मंगल मिलन मनाते हैं। इसका रहस्य यह बताया जाता है कि इससे दुख, दरिद्रता और अपवित्रता दूर होती है। वास्वत में गोबर के बरकुले जलाने से नहीं बल्कि मन की दूषित वृत्तियाँ, कपटभाव और दुर्भावनाएँ आदि ज्ञान और योग की अग्नि में भस्म करने से जीवन आनन्दमय, पवित्र और सुखमय बनता है।

होली को राक्षस विनाश त्यौहार भी कहते हैं। हर मानव के अन्दर जो 5 विकार हैं वे ही उसे राक्षस बना देते हैं। परमात्मा के दिए हुए ज्ञान द्वारा इन पाँच विकारों का विनाश हो जाता है और मानव में देवत्व उदित हो उठता है।

ज्ञान-योग से कर्म बनते सुकर्म

होलिका का अर्थ भुना हुआ अन्न भी होता है। होली के दिन गेहूँ, जौ आदि को भूना जाता है। वास्तव में परमात्मा के दिए हुए ज्ञान और योगबल द्वारा कर्म, सुकर्म बन जाते हैं। जैसे भुने हुए बीज को बोयेंगे तो पौधा नहीं उगता। ऐसे ज्ञान-योग की स्थिति में रहकर कर्म करने से पाप कर्म के बीज जल जाते हैं।

स्वांग अर्थात्
जीवन-लक्ष्य की स्पष्ट झलक

होली के दिन मनोरंजन के लिए स्वांग के रूप में अपने पूर्वजों को याद करते हैं। उनकी झाँकी सजाते हैं ताकि जीवन के लक्ष्य की झलक स्पष्ट दिखाई दे कि हमें भी अपने पूर्वज देवी-देवताओं समान गुण सम्पन्न बनना है। उपरोक्त रीति से होली के यथार्थ रहस्य को जानकर होली मनाएंगे तो सच्चे पुण्य के भागी बनेंगे।

परमात्म अवार्ड

● **ब्रह्माकुमार प्रेरित, लखनऊ (हजरतगंज)**

बात सन् 2010 की है, मैं देहरादून के एक प्रतिष्ठित कालेज में ग्रेजुएशन की पढ़ाई पढ़ रहा था। हमारे कालेज में हर साल कल्पना चावला एकैडमिक्स एक्सिलेन्स अवार्ड आयोजित होता था जिसमें पूरे इंस्टीट्यूट के चंद बच्चों को ये सम्मान प्राप्त होता था।

जब सन् 2010 में मैंने यह अवार्ड कार्यक्रम देखा तो मन में प्रश्न घूमने लगा कि यह मुझे क्यों नहीं मिला। मैं पढ़ाई और एकैडमिक्स में अच्छा रिकार्ड रखता था। मेरा चिंतन बहुत चला इसलिए उस रात मैंने भोजन नहीं किया। तब ही कुछ मित्र आकर मुझे कहने लगे कि हमें भी लगता था, आज आप ज़रूर चुने जाएँगे। यह सुन मेरी जान में जान आई और मैं शान्ति से जाकर सो गया।

इसके बाद मैंने पढ़ाई पर और ज्यादा ध्यान देना शुरू कर दिया। मेरी आदत थी कि जो जिस दिन पढ़ाया जाता था उसको उस ही दिन पूरा कर फिर लेटता था अन्यथा मुझे नींद ही नहीं आती थी। सन् 2010 के अंत में मुझे ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त हो गया। सन् 2011 में फिर से अवार्ड कार्यक्रम कालेज में आयोजित हुआ। कार्यक्रम के कुछ दिन पहले लिखित परीक्षा आयोजित हुई तत्पश्चात् कालेज के चेयरमैन, डायरेक्टर तथा रजिस्ट्रार ने मेरा इन्टरव्यू लिया। इन्टरव्यू के दौरान मैं बिल्कुल निश्चिंत था, मैंने सब कुछ बाबा पर छोड़ दिया था, उनका आह्वान कर इन्टरव्यू दे दिया था।

इन्टरव्यू के बाद मैं सोचने लगा कि तीसरा स्थान मिले तो भी बहुत। कुछ ही समय बाद मुझे खबर मिली कि दो दिन बाद आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम में मुझे द बेस्ट स्टूडेन्ट का अवार्ड प्रदान किया जाएगा। परन्तु अब मेरे लिए इस अवार्ड प्राप्ति की इतनी खुशी नहीं थी जितनी कि इस बात की कि मुझे तो भगवान ही मिल गये हैं। पहले मैं जिस अवार्ड के लिए इतना अशान्त हुआ, अब उसे पाने से पहले और पाने के बाद मेरी शान्ति की अवस्था हिली नहीं।

जब इच्छा थी तब नहीं मिला और जब इच्छा नहीं रखी तो मिल गया। इसलिए यह दिल कहता है, जिन्हें परमात्म अवार्ड मिल गया हो, उन्हें और किसी अवार्ड की क्या इच्छा! ❖